अग्नाशय कैंसर से पीड़ित किसान की बची जान, सर्जरी के लिए अस्पताल ने जुटाए पैसे

वरिष्ठ संवाददाता | मुंबई

समय पर सर्जरी नहीं होती तो पूरे शरीर में फैल जाता रोग

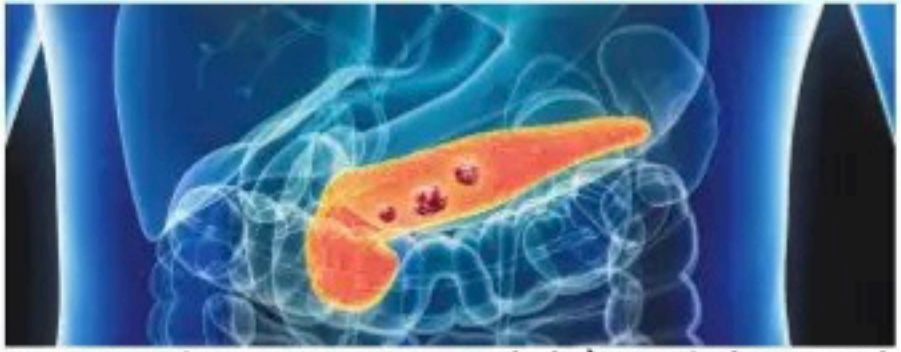

अग्नाशय (पैंक्रियाज) कैंसर से पीड़ित एक 45 वर्षीय किसान की समय पर सर्जरी कर मुंबई के डॉक्टरों ने जान बचाई गई है। वाशिम जिले के किसान का मुंबई के अस्पताल में पहली बार लेप्रोस्कोपिक तकनीक से अग्नाशय कैंसर का इलाज किया गया है। किसान की विकट आर्थिक स्थिति को देखते हुए अस्पताल ने मरीज की सर्जरी पर आनेवाला खर्च भी खुद जुटाया।

वाशिम जिले के एक छोटे से गांव के किसान रमेश शिरोडकर (बदला हुआ नाम) को अचानक पेट दर्द, वजन कम होना, भूख न लगना और गहरे रंग की पेशाब होने लगी थी। स्थानीय डॉक्टर से इलाज के दौरान जांच में पित्त और अग्नाशय की नली के मुहाने पर ट्यूमर के कारण ऑब्सट्रक्टिव पीलिया का पता चला, जिसे पेरियाम्पुलरी कैंसर कहा जाता हैं। हालांकि डॉक्टरों की सलाह पर आगे के इलाज के लिए परिजन उन्हें मुंबई के लीलावती अस्पताल में ले आए। अस्पताल के गैस्ट्रो इंटेरोलॉजिस्ट सर्जन डॉ. डी.आर. कुलकर्णी ने बताया कि मूल निदान के बाद से एक महीना बीत चुका था, ऐसी स्थिति में सर्जरी करना काफी जरूरी था। क्योंकि जल्दी सर्जरी नहीं करते तो कैंसर शरीर के अन्य भागों में फैल सकता था। इसके अलावा मरीज को अनियंत्रित मधुमेह था और पित्त नली में एक स्टेंट था। दोनों कारक घातक पित्त संक्रमण का कारण बन सकते थे। कैंसर प्रारंभित अवस्था में था, इसलिए मरीज की लेप्रोस्कोपिक तकनीक से सर्जरी की गई। डॉ. कुलकर्णी ने कहा कि इस सर्जरी में और एक बाधा थी, वह लगनेवाला खर्च, लेकिन अस्पताल प्रशासन और सामाजिक कार्य विभाग की मदद से सर्जरी के लिए पैसे इकट्ठा किए गए।

क्या है लेप्रोस्कोपिक व्हिपल सर्जरी

डॉ. कुलकर्णी ने बताया कि लेप्रोस्कोपिक व्हिपल सर्जरी अग्नाशय के कैंसर ट्यूमर के लिए की जानेवाली एक सर्जरी हैं। सर्जरी के दौरान अग्नाशय, पित्त नली और कैंसर वाले हिस्से को हटाया गया। यह एक जटील प्रक्रिया होती है। लेप्रोस्कोपिक व्हिपल सर्जरी से छोटे छेद किए जाते हैं। उससे मरीज कम दर्द, कम रक्त हानि और सेहत में जल्दी सुधार होता है।